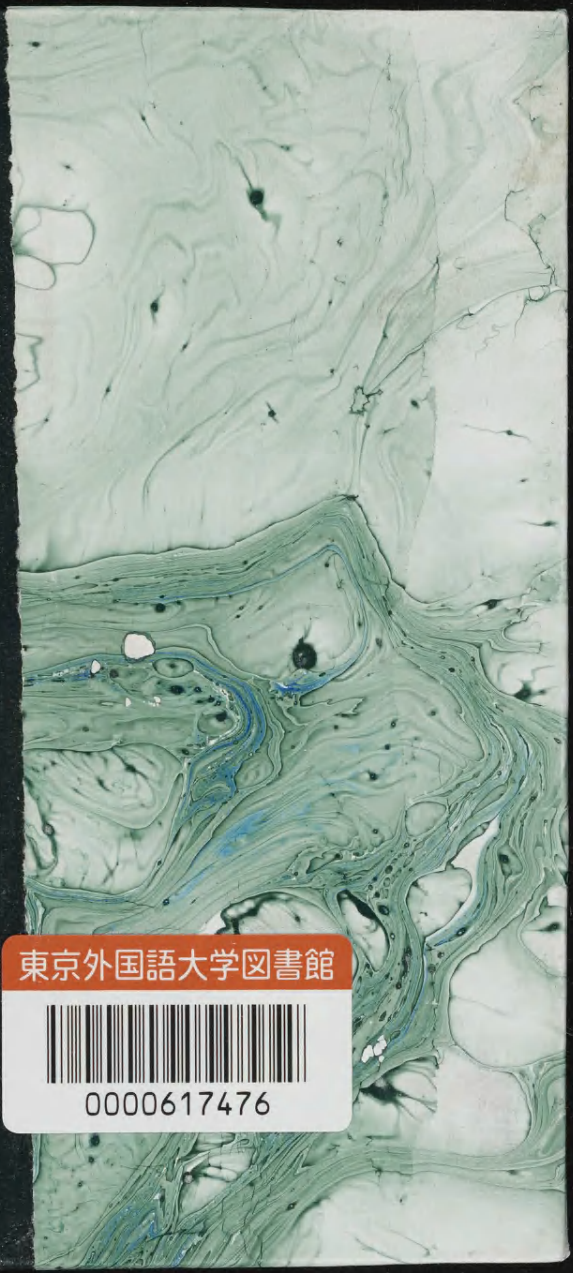

東京外国語大学図書館
0000617476

वीर-पुष्पाञ्जलि

卐

सत्य समान कठोर, न्याय सम पक्ष विहीन,
हूँगा मैं, परिहास-रहित, कूटोक्ति-क्षीण ।
नहीं करूँगा क्षमा, इंच भर नहीं टलूँगा,
तो भी हूँगा मान्य, ग्राह्य, श्रद्धेय बनूँगा ॥

पं० जुगलकिशोर

नं-226
30/7/06
95
Shiw Partap Ta-tia Sardar-shahr.